IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ० कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी

सुशीला

शोधार्थी, हिंदी विभाग

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

डॉ0 संजय कुमार

शोध निर्देशक, हिंदी विभाग

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

शोध सारांश –

प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक युग की एक विख्यात, प्रबुद्ध चिंतक एवं जागरूक साहित्यकार रही है। उनके सभी उपन्यास इस बात के द्योतक है कि उन्होंने समाज को जिस रूप में देखा उसमें व्याप्त समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित किया तथा उन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किए। उनके उपन्यास आधुनिक युग में शोषित, पीड़ित एवं टूटी हुई निम्न वर्गीय ,मध्यम वर्गीय तथा उच्च वर्गीय नारी को शक्ति प्रदान करते हैं।

बीज शब्द –

मध्यवर्गीय ,पुरुष वर्चस्व, प्रतिवाद, स्वावलंबन, स्वाभिमान।

शोध विस्तार –

अग्निहोत्री जी जो अपने समय की एक प्रबुद्ध, चिंतक एवं जागरूक साहित्यकार रही हैं। उनके सभी उपन्यास इस बात के द्योतक हैं कि उन्होंने समाज को जिस रूप में देखा, उसमें व्याप्त समस्याएँ चाहे वे समाज के झूठे रीति–रिवाज हों, उच्च–नीच का भेदभाव, गरीबी–अमीरी की खाई, छुआछूत, हरिजन उद्धार का राजनीतिकरण तथा तिल–तिल घुलकर आधुनिकता का राग, स्त्री के प्रति दोगुला रवैया उनके सभी उपन्यासों में संदर्भों की सम्पूर्णता के साथ परिलक्षित हुए हैं। जातिवादिता, आडंबरप्रियता, तथा स्वार्थ सिद्धि की ओछी मानसिकता, नारी अपमान जैसेय यक्ष प्रश्न आज भी मुह बाए खड़े हैं, ये एक ऐसा चक्रव्यूह है जिसमें फंसकर हम अपनी उन्नति, समृद्धि के रास्ते में बाधाएं खड़ी करते रहेंगे अथवा नई पीढ़ी किसी ठोस नवीन समाधान की आधार भूमि तैयार कर भारत का एक बार फिर से राष्ट्रीय अभिषेक कर पाने में सफल होंगे। उतर तो समय के गर्भ में ही छिपा है परन्तु इतना अवश्य है कि प्रस्तुत उपन्यासों के विस्तृत कथाफलक के माध्यम से लेखिका चेतना, जागृति तथा आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने में अवश्य ही सफल रही है और यह भी कटु सत्य है कि उसने नारी को सशक्त बनाने की दिशा में पहल की है। उनके सभी उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है। इन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय नारियों की दयनीय स्थिति का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। नारी अबला न

रहकर सबला बने तथा समाज में उसकी भी पूर्ण भागीदारी हो, वह पुरुष की यातना का शिकार न बने, उसकी अस्मिता पर कोई चोट न आए इन सब बातों पर लेखिका ने गहनता से विचार किया है तथा उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है।

चूंकि मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि उनके सभी उपन्यास नारी संबंधी त्रासदियों से भरे पड़े हैं, फिर भी लेखिका इन हादसों को देखकर निराश नहीं है। उनके नारी पात्र पुरुष–वर्चस्व के विरुद्ध यथाशक्ति जूझते प्रतीत होते हैं। उपन्यास 'मैं अपराधी हूँ' में शीतल के वहशी व्यवहार के प्रतिवाद स्वरूप उम्मी का कथनः ''तुमने मेरे हाथों में अदृश्य बेड़ियां डाल रखी हैं अब मैं इन्हें अधिक नहीं सह सकूँगी। अच्छी तरह समझ रही हूँ कि इन्हें मुझे काटना ही पड़ेगा। मैं कोई चाबी का खिलौना नहीं जिसे तुम चाहो जब चलाओ, फेंको और तोड़ डालो समझे।''–1

'इन्हें मुझे काटना पड़ेगा– यही नारी मुक्ति का उपाय है।'–2 उपन्यास के शीर्षक से ध्वनित है कि सीमा जैसी नारियां पुरुष के जुल्म को सहते जाने की अपराधिनी हैं। वे प्रतिवाद करेंगी तो जुल्म में कमी आएगी।

''पुरुष प्रधान समाज में नारी को मात्र भोग्या समझा जाता है। औरत हर अवांछित स्थिति को बर्दाश्त करती है– चाहे वह मध्यम वर्ग की हो, या उच्च वर्ग की करोड़पतन, हिन्दू समाज से सम्बन्धित हों, या मुस्लिम समाज से सब किसी न किसी त्रासदी को भोगने के लिए अभिशप्त हैं। यह भी सत्य है कि नारी चाहे किसी उम्र की हो, किसी वर्ग की हो उसके श्रम और देह के शोषण की आम बात है। उसे अनमेल विवाह का शिकार होना पड़ता है क्योंकि मर्जी उसकी नहीं बल्कि घर के पुरुष की होती है।''–3

लेखिका स्वयं बताना चाहती हैं कि ''नारी जीवन का अभिशाप और उसकी पीड़ा उन्होंने स्वयं भी झेली है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में इसे अभिव्यक्त किया है कि वह नारी मात्र की पीड़ा जान पड़ती है। नारी के मौन को शब्द नारी ही दे सकती है। उसके दुःख को औरत ही समझ सकती है। वह ही पहचान सकती है– औरत के शरीर पर अंकित घावों के निशानों को।''–4

स्त्री–पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, एक दूसरे के पूरक, सहचर और सुख–दुःख के साथी कहे जाते हैं परंतु वास्तविकत में यह तस्वीर कुछ और ही रंग दिखाती है। स्त्री को दोयम दर्जे पर जीने के लिए बाध्य किया जाता है। उसकी सोच की कंडीशनिंग भी इस प्रकार की जाती है कि वह स्वयं को दासी, अनुचरी अथवा पुरुष के हाथों की कठपुतली ही समझे। विवाह स्त्री की दासता पर लगने वाली सबसे गहरी मुहर है, इस मुहर का रंग न तो कभी छूटता है और न ही स्त्री दासता की इस कारा से जीते जी छूट पाती है।''–5

उपन्यास 'अभिषेक' की कहानी भी एक मध्यमवर्गीय परिवार की विदुषी, अध्ययनशील तथा स्वाभिमानी रेणू की कहानी है। रेणू के संघर्ष कथा के माध्यम से लेखिका ने आज की मुखर नारी के संघर्षों, उसकी वस्तुस्थिति, उसके अमंगल और साथ ही उसके स्वावलंबन और स्वाभिमान को अभिव्यक्ति दी है। उपन्यास 'कुमारिकाएं' में नारी पात्र सुचिता की बढ़ती मनोव्यथा को देखकर मन करुणाद्र हो उठता है एक व्यापक कटु सत्य इसका कथ्य है– ''देहकामी, धनकामी, और सम्मानकामी पुरुष की अस्थिर प्रवृत्ति अपने ही बनाए नियमों में बंध नहीं पाती, वह अत्याधिक मात्रा में नारी योनी के सन्दर्भ में अपनी सजातीयता में सामाजिक, अनैतिकताओं की सहभागी होकर मिथ्या और खोखले आदर्श की मीनी नाटकीयता से नारी वर्ग को नैतिकता का मार्गदर्शन देता है। संतोष और धैर्य धारण करने का पौराणिक प्रवचन और सदुपदेश देकर उसकी अस्मिता का कुशल हितैषी बनता है।''–6

उपन्यास 'टपरे वाले' की एक नारी पात्र पचिया जो बहुत ही गरीबी से जूझती है। अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए वह अपना जिस्म बेचकर सीधी महाजन से आटा, दाल, चावल लाती है तथा परिवार का गुजर–बसर करती है।– ''कालिया के माध्यम से उसकी लाचारी ही उन्हें साहसी बनाती है। वह कह उठती है–''अपनी यह बीमार माँ रात–रात भर खांसती रहती है, मरती क्यों नहीं .... '' कब तक अपना शरीर बेचकर इनका पेट भरेंगे।''–7 नारी को प्रसाधन मात्र समझा जाता है। पुरुष उसके हाथों से शराब के जाम पीकर प्रसन्नता का अनुभव करता है। उपन्यास 'टपरे वाले' की एक पात्र जमीला के द्वारा लेखिका ने इस बात की पुष्टि की है– ''जमीला मूर्ख नहीं थी। सिपाही भी उसके हाथों से प्याले लेने में खुश हो जाते। पीकर उसकी गोल बड़ी आंखों में कुछ खोजते हुए मस्ती से अपना कर्तव्य भुला देते।''–8 आज हमारे समाज का इतना नैतिक एवं चारित्रिक पतन हो चुका है कि स्त्री अकेली कहीं भी सुरक्षित नहीं है। अनैतिकता का कीड़ा घुन की तरह चाट रहा है। शहरों में आए दिन दुष्कर्म होते हैं। वहशीपन की हद हो चुकी है। इन सब का परिणाम नारी को ही भुगतना पड़ता है। लेखिका चाहती हैं नारी को शिक्षित होना होगा। पुरुषों के सम्मुख स्वाभिमान के साथ खड़ी होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवानी होगी। इन सबके लिए आवश्यक है जागरूकता की। अतः नारी को जागरूक होकर अन्य नारियों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाना होगा।

अतः निःसन्देह कहा जा सकता है कि अग्निहोत्री ने नारी की वास्तविक स्थिति एवं उसकी दयनीयता का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। इन्होंने अपने उपन्यासों में उच्चवर्गीय नारी, मध्यमवर्गीय नारी तथा निम्नवर्गीय नारी तीनों को सम्मिलित कर उनकी गहरी वेदना को प्रकट किया है। पुरुष प्रधान समाज में नारी का कोई अस्तित्व नहीं है। डॉ० कृष्णा मानती हैं कि उपन्यासों में अधिकतर नारी पात्र आप में सीमित, कुंठित और यातनाग्रस्त नहीं हैं। व्यापक यथार्थ जीवन से उनका रिश्ता बना हुआ है। परन्तु अधिकतर नारी शोषण का शिकार है उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। इनके नारी पात्र घर की चाहरदीवारी तक ही सीमित हैं जो आस–पास के जीवन से जूझते हुए दिखाई देते हैं जो प्रेरणा देते हैं कि जीवन हारने, टूटने एवं पलायन के लिए नहीं है, वरन जीवन की सार्थकता प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त करने में है। आज सेक्स के प्रति खुलापन, विकृत सेक्स, नई पीढ़ी के द्वंद्व आदि का चित्रण भी उपन्यासों में किया गया है। समाज पुरातन हो या नवीन (आधुनिक) स्त्री के प्रति सभी का रवैया एक सा ही रहता है। अतः नारी की मनोदशा का वर्णन बहुत ही प्रासंगिक बन पड़ा है।

निष्कर्ष –

अतः हम यह कह सकते हैं कि कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने उपन्यासों के विस्तृत कथा फलक के माध्यम से चेतना , नारी जागृति एवं आंदोलन की पृष्ठभूमि को तैयार किया। उन्होंने नारी को सक्षम बनाने की दिशा में पहल की। वे कहीं भी निराशावादी दिखाई नहीं देती। उनके नारी पात्र कर्तव्य एवं दायित्व को देखकर निराश नहीं होते बल्कि एक ठोस नवीन समाधान प्रस्तुत करते हैं। इसलिए उनका साहित्य केवल साहित्य नहीं बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता के पुनर्जागरण का दस्तावेज है।

संदर्भ–

1. कृष्णा अग्निहोत्री, मैं अपराधी हूँ, पृ० सं० 27
104/ए0 30सी0 रामबाग अमन प्रकाशन, कानपुर।

2. डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ – कृष्णा अग्निहोत्री : सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन, पृ० 114
अमन प्रकाशन, कानपुर, 2015

3. वही, वही, पृ० सं० 114
अमन प्रकाशन, कानपुर, 2015

4. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्श के विविध पहलू, पृ० सं० 263
लोक भारती पुस्तक विक्रेता तथा वितरक, इलाहाबाद, 2009.

5. कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं दिल मेरा, पृ० सं० 100.

6. सुरेन्द्रनाथ मिश्र : कृष्णा अग्निहोत्री : सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन, पृ० सं० 108
अमन प्रकाशन, कानपुर, 2015

7. कृष्णा अग्निहोत्री, टपरेवाले, पृ० सं० 52

8. वही, वही, पृ० सं० 108
भारतीय पुस्तक परिषद, 3320–21, जटवाडा, दरियागंज, नई दिल्ली।